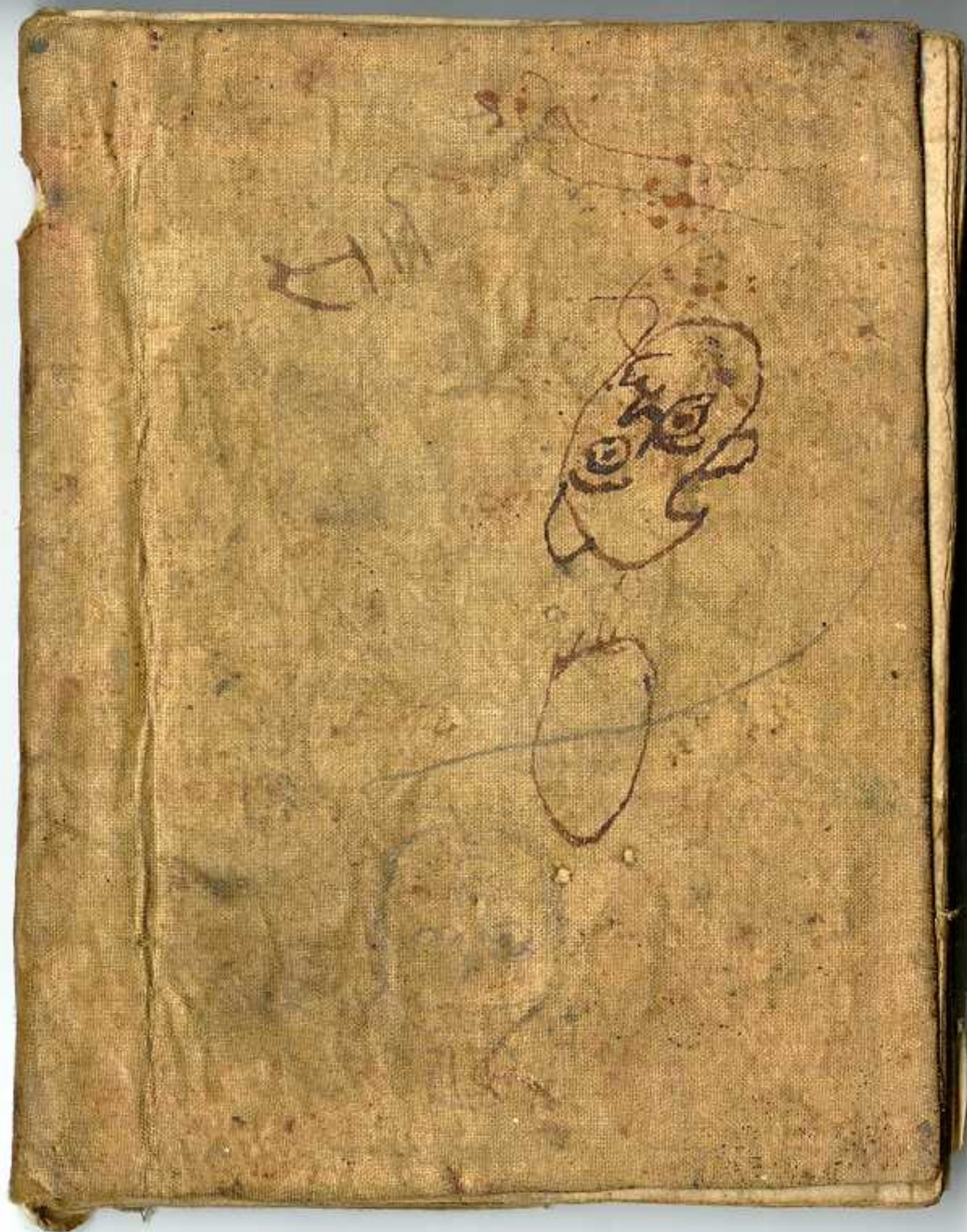
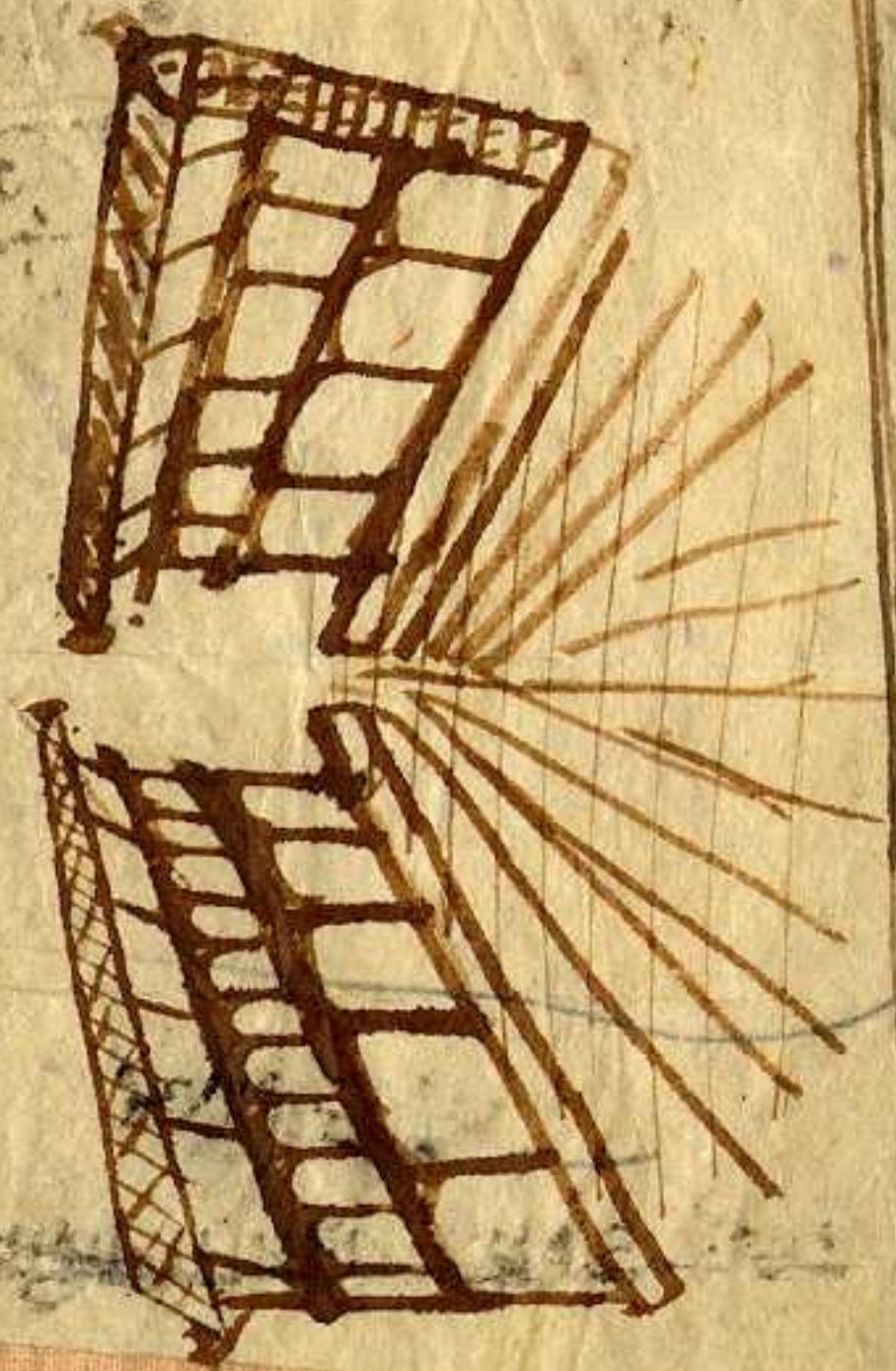








राशि ३२

स्वाग्निवीमदान

स्वीदि

कुमारकुमार

स्वस्ति श्रीगो

रीराज पत्र

~~REGINA~~



इववका



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥





स्वस्ति श्री



वीगरोशायतम श्रीवासुदेवायतम  
 श्रीमाधोदेवितम श्रीसत्यतितेदेवितम  
 श्रीभवानिर्मायतम नारायणायतमो  
 भमाभरकोवहारा नामताई अत्माज्ञा  
 श्री



श्री

गजीन्द्रमोक्ष भाषा

ॐ नमो

अग्रे

ॐ नमो अग्रे

ॐ

श्री गणेशाय नमः । नमः  
इति

राजापरीक्षितजीने अतिआहामाती

मोक्षनुभयो प्रजागरी सुखदेवताइ

कतरीतलेह रिजीले गजताइ ताचा

ग्राहा मज्जदुइ रुग्णादुताया ॥१॥

विस्तारप्रवक कथाभवहो मवर्णन ।

मुनरुतादु मपनिपदि धेरतनतासि मुन

ताइ मुनि श्रीमुकेदेवजिले । एज्जम्

ममहममि मममु म को सुखी

ले सिद्ध

कखगरीन ए भवला







ॐ अथ स्वप्नाध्यायः

श्रीभगवाद्वाक्यम्

नन्द उवाच

कंहीकावमा कृष्ण चन्दननाड  
५० वर्षसम्पन्नानि कृतमगुरु  
पुन्याहुत आयाका नन्दानि कथा  
का प्रतापमा कृष्णजिर्मग प्रष्टु  
गर्दभमा हे कृष्ण कृतस्वपत्ता  
ते कृष्ण पुनर्मीलदु कृतस्वपत्ता  
नाते मासरेदयी मुक्तहुद कृष्ण

स्वप्नानाद वडीया मन्दत ये  
स्वप्नजलमेतत् मलाइ केही वडी  
वम भति बीना मलाइ भग्या ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

यतिवातगुनि कृष्ण चन्दनभागा  
न आशागत हुद हवापातन्द  
जि वेदवेदमा कृष्णकान्त कापी  
अये लाइ मासवेद सेवेकतलाइ  
हुम्दाइ कृष्ण हुम्मा पति केते  
मायां भते अन्दमा विवेकसुद ५  
हमाकहे का स्वप्ना ध्यायक कृत  
महगुरुनाइ कहन्दु ॥ २ ॥



स्वप्राप्ता प्रति शोभागरी देवीया  
कोवेतागरी समग्रियाको वठीया  
फलदीपाहुइ सोविस्तार पुरुषक  
मकहुइ सुनीवकी वस्त ॥ ३ ॥

मोमले कहना आत्माको स्वप्नाक  
लोहोभत्ता बहुतपुन कतदिनेहो  
आस्वप्ना ध्याय सुनाले मनुमान  
मनुमे गंगा प्रागन्माको पुतपाहुइ  
॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

जतु स्वप्राप्ताजीको पेडाया प्रहर  
प्रादेवीन्द सो वधदीन्मा फल  
दीपाहुइ दोआप्रहर को ५ मेहा

मापनदीपाहुइ लुतिआप्रहरमा  
देवीयाको ३ मेहा माफलदीपाहुइ  
॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

चोआप्रहरमा देवीयाको १५ दीन्मा  
फलदीपाहुइ अफुनोदय वेलासा  
देवीयाको १० दीत माफलदीपाहुइ  
प्रागन्मा सुजेहुदयेवेलासा स्व  
प्रादेवी जागभेगो भते सोफलदा  
यकहुइ ॥ ६ ॥ ॥ ॥

हेवावातन्दजि दीतममममा भये  
कोपितान्त स्वप्राप्ता देवेयो तेरा रजो  
त सोदायकले अथवा रंगले मुक्त



भयाको जो स्वप्नोदयदह ॥ ५ ॥

माधतिया बडीया जेला भयापती  
नीराफलदह ॥ ८ ॥

वेलाभ भयाका जरापीसापुलेभार  
भयाका मोहे दरयाका मतुखेनर  
ताहु सुत्पाका सारकोकेसकृपा सु  
त्पाका यस्तोने देखी भु स्वप्नोको बी  
मफलदह ॥ ९ ॥ ॥ ॥

जुतमतुखेले नीद्राका मोहाकेलेवडी  
स्वप्नोदयपदी फेरिसेभने  
शरी मासप्राकडीया नभे पति

जेला मतुखेले स्वप्नोको मरुलपाहु  
देत ॥ १० ॥ ॥ ॥

फेर देखको नाशिके गोत्र का  
आदमी लाइ कह भते स्वप्नोको  
नासकृपा आपतिदेम जाइदह  
तीमा रा भयाका लाइ कह भते  
अति माका जमा वगत जाइ नीज  
जात लाइ कह भते रेगा लाइदह  
॥ ११ ॥

शत्रु लाइ कह जो भने भयकर डा  
प्राप्रकृद मुख लाइ कह नासे रुग  
जाइदह स्वाक्षिजात लाइ कह धतनास  
हइ रातमा स्वप्नो कह ले को डाइदह ॥ १२ ॥



बढीया स्वप्ना देखीकर येरनिद्रिया भने  
सोकमापला पडितलाइ केह स्वप्ना का भला  
रचिता को स्मृत पुगए तर कसिमा नेहा भ  
भे पडित भये पति केहु सुसर्व धोएन ॥ १३ ॥

अवस्य प्रादस कहन्हु हेवु जश्वर तन्दीज  
स्वप्ना मागाइ भो हति जोडा देव जद्वार  
भवतहु ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

येति चलो भने अथवा ताहा विसाया  
भने राय को देखे भने चानदीय को देखे  
भने तेमो हातमा विना जीय को देखे भने  
अनाजुन युक्त भया की भुमीला भहुए  
॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

स्वप्ना माहति यार वान सहजे चानदीय भनी

अथवा कोरपे जा भने अभवा जाडि  
भोगत ले भयो मुष्टि सके देखे भने हा  
र्थ जो भहुए ॥ १६ ॥ ॥ ॥

अगम अर्थात् नोत दा <sup>ली</sup>मा जमताया  
का स्वप्ना देखे भने भने जसो स्वास्ती पाइए  
आयु भयो पराइको भयो पिसावले भा  
इसा दाम्भे भयो आयु भी अथवा दोभे  
को भो वीर्य दायो भने अथवा जाडामस  
नगमो ॥ १७ ॥ ॥ ॥

रात जाडाम नद सहमा प्रवस भयो समु  
न्दमा छुसाम अथवा अमृत पान गरेस  
यस्ता स्वप्ना देखे बढीया करानुन्द धन प्रा  
प्ति पति बहुतहुए ॥ १८ ॥ ॥ ॥



स्वप्नामाहाति राजासु गोइदीप अन्त  
फल कन्या दयाता रथ चो जा येतिदेवे  
भने परिवार वठदइ न तु नो कर्तहिइ  
॥ १८ ॥

स्वप्नामा भरीधडा ब्राह्मण वन्दे भागो फुल  
सम्राधर सेतो धातु नहु को बस्या दिखे भने  
दुवला भइइ ॥ २० ॥

स्वप्नामा गाइको दुत धू देवे भने धम हुने  
काम होला आद्याको काम पुगला धन  
पनि मिल्ला ॥ २१ ॥

जुन मनुख स्वप्नामा कमलकाजनामा  
दही भो धूप भो मह भो पीठो भो अन्न भो  
इति नदीका तिरमा वनि स्या भने भ

वस्तेत राजाहुइ ॥ २२ ॥

जुन मनुख स्वप्नामा मनुखको भो पक्षी  
को भो माछा भो भने वहुत वढियावात  
सुनुदइ पान्छिनु फल पनि पाइइ ॥ २३ ॥

जस्तो यो स्वप्नामा अकनिते दियोको दयाता  
जुता पोही सगरही डो भने तसै रितले  
मान पुर्व कहि न पाइइ अल न जागल्पा हु  
जालो सुन्दर तर वारि भो भने मनुको  
नास गइ ॥ २४ ॥

स्वप्नामा मदी भै लम्कर पछि लगाइ हिजो  
भने तसै मालिक हुइ पत्न पत्नको वृक्ष  
देवे देवेको अवस्था प्राप्ति हुइ ॥ २५ ॥



स्वप्रामाजिगाइ सपलेइइइ तेरुजाइ  
द्रव्येनाभहुइ सुपचन्द्र स्वप्रामादेवेभने  
राजदेवी मुक्तहुइ ॥ २६ ॥

जस्तेस्वप्रामा कुरुरा कुराइ कुराइ कोपो  
थी देखेभने भतेजसोशमीइलीपाइइ  
स्वप्रामतेनपेको देखेभने प्रतिगुपाइइ  
पुत्रपतिपाइइ ॥ २७ ॥ ॥ ॥

जस्तेनदीतिर दही जपुइया याको अ  
नभो धीर भो योभने अरुना च्यातिप  
काकमलपत्र भयापनि स्वप्रामादेवेभने  
राजाहुइ ॥ २८ ॥ ॥ ॥

स्वप्रामा जुको सप विच्छेज्जे सुकेदेवी  
भो पुत्रभो बीजपुभो अर्थात्

जीवाजिह्वालिपाइइ ॥ २९ ॥

स्वप्रामाजोमनुव दाहुइया वेद्वेभो  
सिडुहुत्ता जलुभो वातरभो इगालेपीड  
गोको देखेभनेराजाहुइ धनपनी पाइइ  
॥ ३० ॥ ॥ ॥ ॥

जस्तेस्वप्रामा माह्यमाभु मेतिर्सव  
श्रीरवड हीरा पायोभने प्रसन्नधन  
पाइइ ॥ ३१ ॥ ॥ ॥

प्रदीरागात् सुनुविष्ण स्वप्रामादेवे  
भने धनपाइइ देवताकामति महादेव  
कालिड देखेपनि जयपाइइ धनपाइइ  
॥ ३२ ॥ ॥ ॥ ॥

स्वप्रामा पुत्रकोविलसुक्ष पुत्रकोभापने



वृक्षे देवी भो भने धनपाहुँ वन्दे  
अभिदेय धन भयो वृद्धि भो स्वयं भो  
यतिने लोक मीन्द ॥ ३३ ॥  
तपसि अमलाको फल रक्त कमल देखेपनी  
धनमीन्द देवता ब्राह्मण गाई पीत हम्  
फकिरुने स्वप्राप्ति दीन्दु को हीनै वी  
पनामिन्द ॥ ३४ ॥

शकुल वस्त्र लगाय की सेपत मा लालाया  
की राशि ग्रीह जे अङ्गु माल गोरुको  
स्वप्राप्ति देखेने लक्ष्मी प्राप्ति हुन्छ सप  
रा जग्गा वार सुख प्राप्ति हुन्छ ॥ ३५ ॥

स्वप्राप्ति पैं लोकर जैं लोभाला गहनाय  
न लालायाका रिहू अंगु लोहा जे

को देखे भने तेरुनाई क ~~स्व~~ व्याकुल  
॥ ३६ ॥

स्वप्राप्ति सेता वस्त्र अरुनि हाइ देवा इति  
वस्तु देखी कोहक आहसेवे लोक वदीया  
॥ ३७ ॥

स्वप्राप्ति गृह तोपामा क लाया की सिवा  
लहू हासै जस्का घरमा बस्मा को देख  
इ तेरुको चितायाको कुरा पुग ॥ ३८ ॥

स्वप्राप्ति ब्राह्मण भया देवता भया देवक  
न्या भया ब्राह्मण भया कुमिह लक्ष्मा  
ई फल दीन्दु तेरुनाई पुत्र हुन्छ ॥ ३९ ॥

स्वप्राप्ति हेतु जि ब्राह्मण आइ आ  
मिवादि दीयो भने पद पदमा सुख  
हुतो मन्मान पनि पाइन्छ ॥



स्वप्राप्ता आः कसमात् गाइ पायो भते  
भूमीला भुइयोस्की सि जनि पतिवता  
हुइ ॥ ४१ ॥ ॥ रदी ॥ ॥

दाशाशानि मेराताहु मधुमुदत या  
हुजार पल्ल भक्तपुर्वक जेपास  
तो पापदेवि भुतेको हुइ दो तेरो दे सेको  
धर्तीया स्वप्रापति बढीया स्वप्राको फ  
नदीने हुइ ॥ ४२ ॥ ॥ ॥

अमृत केशव विष्णुहरी सत्यहस  
नामायगा इआठ तां आत्मता तडीया हु  
॥ ४३ ॥ ॥ ॥

भलेने पवित्र भै पूर्वमुखक कि आफु  
कम समाधि गरी इता जाज

पुछ सेतिअ पापि भैदु स्वप्राताम  
भै सुखप्राप्त पाहुइ ॥ ४४ ॥

इनेदस्ता पवित्र पूर्वतिर मुखक कि  
भक्ती भक्ता युक्त भै जपगुह भते सो  
पाप लेरही तभ सको हुइ दो धरिया  
स्वप्रादेरको भने पति बढीया स्वप्रा  
को फल पाहुइ ॥ ४५ ॥ ॥

इनेक ल्याण दायक मेरा १० तां भक्ती  
पुर्वक जो १०० प.र जेपासा गरी दि  
छी रोगनीस्की जाइ ॥ ४६ ॥

इनेना नाम जम्मा भते बन्धत देखी  
हुइदहु बाहिस्तालिते दसजाज  
पी भते महापहिपीत स



मुद्रभेदविषयपाइने १० तोदसजा  
य आधतिजपिभेते धनवानहुइ ॥

४८ ॥ ॥ ॥ ॥

सप्राप्तमाजसकन हतिले सुणलेपकी  
आफ्रा मस्तक मारोष भते निश्चयरा  
जाता भहुइ वेदमा कहकोइ ॥ ४९ ॥

स्तप्राप्तमाधति भयोको ब्राह्मण ले अहु  
मातागया भते अथवा स्तातगया  
तकी प्रसी हुइ ॥ ५० ॥ ॥ ॥

जुन पुन्यतमा पुरुष कन स्वप्रा  
कहाहुन ले पुन दिखे भने जित  
ये सुधर सुमपति सिता

॥ ॥ ॥

स्वप्राप्तमाजसलेति कहुन तमा  
प्राकोरा जगह रत्य अहुं छारहे  
यो भये जये प्रप्ति होला धनवा  
रहोला धिअ धनानुगर्न पाई  
ला ॥ ५१ ॥

जहुन मनुष्य नाइस्वप्राप्तमा जो  
कोइ ले पुर्व कलसदि यो भन्या  
ते स्तेछोरो पाईहु संपति धानि  
पाईहु ॥ ५२ ॥ ॥ ॥

जुन मनुष्ये का रामा गह वा  
कपडा लाया कि सुन्दर त्रिखा  
लि साठ अथवा पाधि हातम  
लि छर मित्र पत्नी भन्य  
प्राप्ति भईत भनि जात



जस्मनुबेकास्वप्राभाकल  
उभाडकनलुददगदका  
लाकाकोलीलेजादाकरी  
मेनकाईनदहीलेसकोमे  
होरेपरीकोमकीकानु ४८  
जुममनुकाकाचुमाशालन  
किमगकेबीहोभाकाकोदे  
कोममेकोमाहदेवका  
कीकोनालदमीमाहकनदिक  
नीजानु ॥ ४९ ॥ तीउजनामा  
वेकेदिगकोमकीकाककोमे  
कमजुलीकुलीकोलकोमा  
कमायायाभनेतेस्कोभीप्रा  
पनादेवीलुखई ॥ ५० ॥

स्वप्राभाजसुआईबालगादेमेती  
कोहारदीयोफलकोमालाभोष  
दनभोदीयोभनेतेस्कोयानिस  
वनहलेलक्ष्मीहृद ॥ ५१ ॥  
स्वप्राभाजस्तेगोरोवरपनाकाह  
लेदोउखुविलोभन्यापायोभ  
नेतेस्काचारतरफवाटलुखमि  
लखमीलक्ष्मीप्राप्तिहृद ॥ ५२ ॥  
ब्राह्मणलेहोसब्राह्मणीहोसस्वप्रा  
भाजसनाईछातासपनमाला  
सीरमालाईदीयोअठवाओटा  
ईदीयोभन्यापोराजाहृद ॥ ५३ ॥



जोमनुष्य स्वप्नामाश्रमावसीयही भो  
क्षीरभोषाया भये निश्चय राजाहु  
॥ ५४ ॥ जुनमनुष्य कनवाहारा  
नेहोस वाहारा निहोस मोजेकाभो  
डामारा विदुदही जे दीवोस यनि  
थारा जाहुन्छ ॥ ५५ ॥ जुन स्वप्ना  
मा ६ वर्ष किरामा गहना पास कला  
याको किन्या संपुष्ट भैनेनेस्का  
उपर पारवति पुसन्न भइन भनी जा  
नु ॥ ५६ ॥ त्येसोस प्रोदयो भने  
यस द्विब होला धन जग्गा दोरा घोरि  
यस रिड होला कीहुलो धनाढ

होला किरा जाहोला ॥ ५७ ॥ जरका  
उपर स्वप्नामा सेनाय होला कयडा  
पैहिकी मुन्दरी स्त्री पसन्न हुन्छ  
भनेन्या कवि पिराड त हुन्छ ॥ ५८ ॥  
तेसो सुंदर स्त्रिमे स्वप्नामा जसला  
ई पोसत कदीई भनेलो कमा प्रख्या  
त भयको पिराड त हुन्छ श्री कवि  
पनि हुन्छ ॥ ५९ ॥ तेसो सुंदर स्त्रिमे  
ज्वप्नामा आफ्रा दोरा लाई आफु रने  
पछा येसो पठाई भने मानु तो रागर  
स्त्रीने के दोरा ठहर्छ तेस्दे स्त्री  
यसिडको हो हुयेन ॥ ६० ॥



अथ कन स्वप्राप्तावाहणार्थादि  
राजैर्द्विगरी यथा ~~यथा~~ यपुस्त  
कदीगय भनि न्यायाने ते स्त अ  
धित्तादिना कमा कहें जमा हुन्द  
॥११॥ स्वप्राप्ता जु न मनुष्ये वाय  
मा अथवा जाहो नौहों अथवा जका  
हाटवान भयधानि पोस्त कपायो भ  
ने पण्डित होना प्रीथी विनत्मा प्र  
ख्यांत पाने होला ॥१२॥ स्वप्राप्ता  
वाहणार्थादि राजैर्द्विगरी यथा यपु  
स्तकदीगये न्ये न्यायाने ते स्त अ  
धित्तादिना कमा कहें जमा हुन्द  
अथवा न्यायाने ते स्त अ

अथवा

स्वप्राप्तावाहणार्थादि जने भए  
यनी वडा देवता को मन्दी ए भन  
न्याय पुरुष जानी धनवान् गुरावा  
न बुद्धिमान् हुन्द ॥१३॥ स्वप्राप्ता  
जस कन मन्दीयो अथवा यथ  
थर को देव मूर्ति दीयो भने न्या  
पुरुष जानी धनवान् सने ज  
पको मन्दी सिद्धि पाउनु ॥१४॥  
जस कन स्वप्राप्तावाहणार्थादि  
अथवा ध्येरीने भयायानि आ  
फले सत्कार गारि आसि वदिदी  
या भयाकि राजा को



ला ॥ ६५ ॥ स्वप्रामासनेनो फलवि  
द्यायाको मुनिब्राह्मणाले दीयो  
भनेन्योनिश्चयराजा हुन्छ ॥ ६६ ॥  
स्वप्रामाब्राह्मणानाना प्रकारको  
स्वर्गविनाई र चमावूसी देखायो  
भन्या देखने लाई ठुला आयुर्दा  
हुन्छ धनवान हुन्छ ॥ ६७ ॥  
स्वप्रामाजसलाइ ब्राह्मणाले हास  
ब्रह्मणीले हास वा केन्यादानदी  
यो भनेने सलाइ धनवान हुन्छ  
अथ वाराजा हुन्छ ॥ ६८ ॥  
पतलाउसमुद्रगंगाबालो

सपेनसर्वसयेन पर्वतदेख्या भने  
धनपापि हुन्छ ॥ ६९ ॥ स्वप्रामाज  
मनेमरे के देख्छने स्को आयुर्दा  
वढदछु निर्गोपि पुरुषने गेजी  
लाई देख्या भने दुखि हुन्छ मुनिव  
लाई देख्या भने सुखी हुन्छ ॥ ७० ॥  
स्वप्रामा मुदी खिमेजडन पुरुष  
लाई मेरा स्वामी हो भन्दै पो पु  
रुषराजा हुन्छ ॥ ७१ ॥ स्वप्रामा  
फरुकीको मानाले याकी कुमा  
री देख्या इद्रानी वा सपेन मेघदे  
ख्या भने ठुलो प्राप्ति वा पाई  
न्छ ॥ ७२ ॥ स्वप्रामाज



हृषा आइ मेरे कमारे भइ सर  
भन्यो भने नारायण का दास को  
भक्ति कइ करण पांडुर वैभव  
यनि हुन ॥ ७३ ॥ स्वप्नामा वहु  
शेदेखाना रायन वा मा हो देव  
भनी जानु बहणी देखान  
धमी वा पारवति भनि जानु रे  
नो पोसा कला या को सिंदरे  
गा यत्रि वा गंगा वा सरस्वति  
भनि जानु ॥ ७४ ॥

अहोर्निका पोसा कला या को  
कन्या देखि रवी का भनि जा  
नुवाल क देखि बहणी पाल  
जा पाल भनि जानु भनि स्वप्ना  
जान्या हर हने को दर ॥ ७५ ॥  
यनि भनि कन श्री कृष्ण चंद्र  
जी नंद प्रानि आ जाग रु हुन  
हपी ता हेवा वा पुरा पव बठा



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय







|    |     |     |     |     |     |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ੧੫ | ੧੬  | ੧੭  | ੧੮  | ੧੯  | ੨੦  |
| ੨੧ | ੨੨  | ੨੩  | ੨੪  | ੨੫  | ੨੬  |
| ੨੭ | ੨੮  | ੨੯  | ੩੦  | ੩੧  | ੩੨  |
| ੩੩ | ੩੪  | ੩੫  | ੩੬  | ੩੭  | ੩੮  |
| ੩੯ | ੪੦  | ੪੧  | ੪੨  | ੪੩  | ੪੪  |
| ੪੫ | ੪੬  | ੪੭  | ੪੮  | ੪੯  | ੫੦  |
| ੫੧ | ੫੨  | ੫੩  | ੫੪  | ੫੫  | ੫੬  |
| ੫੭ | ੫੮  | ੫੯  | ੬੦  | ੬੧  | ੬੨  |
| ੬੩ | ੬੪  | ੬੫  | ੬੬  | ੬੭  | ੬੮  |
| ੬੯ | ੭੦  | ੭੧  | ੭੨  | ੭੩  | ੭੪  |
| ੭੫ | ੭੬  | ੭੭  | ੭੮  | ੭੯  | ੮੦  |
| ੮੧ | ੮੨  | ੮੩  | ੮੪  | ੮੫  | ੮੬  |
| ੮੭ | ੮੮  | ੮੯  | ੯੦  | ੯੧  | ੯੨  |
| ੯੩ | ੯੪  | ੯੫  | ੯੬  | ੯੭  | ੯੮  |
| ੯੯ | ੧੦੦ | ੧੦੧ | ੧੦੨ | ੧੦੩ | ੧੦੪ |

ਸਤਿਨਾਮੁ

|    |    |    |     |     |     |
|----|----|----|-----|-----|-----|
| ੧  | ੨  | ੩  | ੪   | ੫   | ੬   |
| ੭  | ੮  | ੯  | ੧੦  | ੧੧  | ੧੨  |
| ੧੩ | ੧੪ | ੧੫ | ੧੬  | ੧੭  | ੧੮  |
| ੧੯ | ੨੦ | ੨੧ | ੨੨  | ੨੩  | ੨੪  |
| ੨੫ | ੨੬ | ੨੭ | ੨੮  | ੨੯  | ੩੦  |
| ੩੧ | ੩੨ | ੩੩ | ੩੪  | ੩੫  | ੩੬  |
| ੩੭ | ੩੮ | ੩੯ | ੪੦  | ੪੧  | ੪੨  |
| ੪੩ | ੪੪ | ੪੫ | ੪੬  | ੪੭  | ੪੮  |
| ੪੯ | ੫੦ | ੫੧ | ੫੨  | ੫੩  | ੫੪  |
| ੫੫ | ੫੬ | ੫੭ | ੫੮  | ੫੯  | ੬੦  |
| ੬੧ | ੬੨ | ੬੩ | ੬੪  | ੬੫  | ੬੬  |
| ੬੭ | ੬੮ | ੬੯ | ੭੦  | ੭੧  | ੭੨  |
| ੭੩ | ੭੪ | ੭੫ | ੭੬  | ੭੭  | ੭੮  |
| ੭੯ | ੮੦ | ੮੧ | ੮੨  | ੮੩  | ੮੪  |
| ੮੫ | ੮੬ | ੮੭ | ੮੮  | ੮੯  | ੯੦  |
| ੯੧ | ੯੨ | ੯੩ | ੯੪  | ੯੫  | ੯੬  |
| ੯੭ | ੯੮ | ੯੯ | ੧੦੦ | ੧੦੧ | ੧੦੨ |



Handwritten text on the left margin of the left page.

Handwritten text on the left page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text on the right side of the left page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text at the top of the left page.

Handwritten text on the left margin of the right page.

Handwritten text on the left side of the right page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text on the right side of the right page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text on the right side of the right page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text on the right side of the right page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text on the right side of the right page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text on the right side of the right page, including a large '9' and various symbols.

Handwritten text at the top of the right page.







|     |    |    |    |    |    |     |    |     |
|-----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|
| 97  | 92 | 90 | 90 | 96 | 7  | 988 | 96 | 94  |
| 28  | 96 | 4  | 76 | 96 | 6  | 962 | 96 | 948 |
| 49  | 96 | 2  | 25 | 96 | 90 | 100 | 96 | 932 |
| 56  | 96 | 3  | 48 | +  |    |     | 96 | 942 |
| 67  | 96 | 8  | 22 | 96 | 9  | 96  | 96 | 939 |
| 902 | 96 | 4  | 60 | 96 | 2  | 96  | 90 | 960 |
| 911 | 96 | 5  | 90 | 96 | 3  | 96  |    |     |
| 925 | 96 | 7  | 92 | 96 | 8  | 96  |    |     |
| 943 | 96 | 7  | 92 | 96 | 8  | 96  |    |     |
| 97  | 96 | 6  |    |    |    |     |    |     |

[illegible]



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



۷۰

1. 10 11 12  
 6 10 11 12 13  
 6 10 11 12 13  
 1 10 11 12







1561

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]



॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



